प्रो० A.C. Pigou के अनुसार :- "आर्थिक परीक्षा का क्षेत्र सामाजिक-कल्याण के उस अंश तक सीमित रहा है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रारूपी मापदंड से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।"

Edwin Cannan के अनुसार :- "राजनीतिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन सामान्य कारणों की व्याख्या करना है जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर करता है।"

J.M. Keynes के अनुसार :- "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो उन घटनाओं की विवेचना करता है जो मनुष्य के धन प्राप्त करने समाज में मानव की आर्थिक क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में धन से सम्बंधित उन मानवीय-क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिससे मानव के भौतिक कल्याण में वृद्धि होती है।

मार्शल की परिभाषा पर विचार करने पर इसमें निम्न तथ्य पाये जाते हैं:-

(i) धन की अपेक्षा मनुष्य के अध्ययन की प्राथमिकता. -
मार्शल ने अर्थशास्त्र में धन की अपेक्षा मनुष्य को अधिक महत्व दिया है। उन्होंने स्वयं कहा है कि :- "इस प्रकार एक ओर यह धन का अध्ययन है जबकि दूसरी ओर जो इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है, मनुष्य के अध्ययन का अंश है।"

(ii) अर्थशास्त्र मनुष्य के सामान्य दैनिक जीवन की क्रियाओं का अध्ययन है :- अर्थशास्त्र में मनुष्य के सामान्य दैनिक जीवन सम्बन्धी क्रियाओं का तात्पर्य मनुष्य की उन क्रियाओं से है जिन्हें वह समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संपादित करता है। दूसरे शब्दों में, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मनुष्य जो धन का अर्जन एवं व्यय करता है. उसे ही सामान्य दैनिक जीवन सम्बन्धी क्रियाएं कहते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रो० Robbins के अनुसार अर्थशास्त्र एक यथार्थवादी (Positive science) विज्ञान है न कि आदर्शवादी (Normative)। उन्होंने अर्थशास्त्र में आर्थिक एवं गैर-आर्थिक क्रियाओं तथा भौतिक एवं अभौतिक साधनों के बीच के अंतर को समाप्त कर दिया। इनकी परिभाषा वर्गीकारिणी न होकर विश्लेषणात्मक है और अधिक यथार्थ एवं तार्किक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है।

प्रो० देवेन्द्र प्र० सिंह
व्याख्याता, अर्थशास्त्र विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहार शरीफ
(नालंदा)

Scanned with CamScanner

(iii) अर्थशास्त्र में मनुष्य की केवल आर्थिक-क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है :- मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र में केवल मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाता है। उन्होंने मनुष्य की क्रियाओं को आर्थिक एवं गैर आर्थिक क्रियाओं- दो भागों में विभक्त किया। आर्थिक- क्रियाओं का तात्पर्य भौतिक-साधनों की प्राप्ति एवं उनके उपार्जन के लिये की जाने वाली क्रियाओं से है। उदा- के लिये यदि कोई औरत अपने बच्चे का पालन-पोषण करती है तो उसकी इस क्रिया का अध्ययन अर्थशास्त्र में नहीं होगा क्योंकि उसके इस कार्य का धन के उपार्जन से कोई सम्बन्ध नहीं है लेकिन यदि वही औरत नौकरानी के रूप में किसी के बच्चे की देखभाल करती है तो अर्थशास्त्र में उसकी इस क्रिया का अध्ययन किया जायेगा क्योंकि इससे उसे आय की प्राप्ति होती है।

(iv) अर्थशास्त्र समाज में रहने वाले सामान्य एवं वास्तविक मनुष्यों का अध्ययन करता है :- अर्थशास्त्र में सामाजिक, सामान्य एवं वास्तविक मनुष्यों की आर्थिक-क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। जंगलों में रहने वाले साधु-संतों, पागल व्यक्तियों का अध्ययन नहीं किया जाता है।

(v) धन केवल साधन है, साध्य नहीं :- प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने धन को साधन एवं साध्य दोनों मान लिया था परन्तु मार्शल के अनुसार धन केवल साधन है, साध्य नहीं।

(vi) अर्थशास्त्र भौतिक-कल्याण का विज्ञान :- मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध केवल भौतिक कल्याण से है लेकिन कल्याण की वृद्धि भौतिक एवं अभौतिक साधनों, जैसे - खाना, कपड़ा, मकान भौतिक-साधन एवं सत्संग, चिकित्सा अभौतिक साधन। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध केवल भौतिक-साधनों से है।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र की परिभाषा (विस्तृत विवेचन)

अर्थशास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, फिर भी इसकी उत्पत्ति तो अज्ञात काल में उसी समय हो गई थी जब व्यक्ति ने अपने जीविकोपार्जन के लिये प्रयास करना शुरू कर दिया था। प्राचीन अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को राजनीति अर्थशास्त्र (Political Economy) के नाम से पुकारते थे और यह तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र एवं नीतिशास्त्र का अंग माना जाता था। कुछ अर्थशास्त्री सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तु (Aristotle) को पहला अर्थशास्त्री मानते हैं जिन्होंने अपनी पुस्तक "Politics" के प्रथम भाग में अर्थशास्त्र को "गृह-प्रबन्ध का विज्ञान" कहा।

बाद में वाणिज्यवादियों के अनुसार राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिये धन अत्यंत आवश्यक है, अतः राजकीय दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र धन के अध्ययन का विज्ञान माने जाने लगा। अंग्रेज वाणिज्यवादी अर्थशास्त्री सर जेम्स स्टीवर्ट (Sir James Steuart) के अनुसार :- "अर्थशास्त्र सामान्यतः मितव्ययिता तथा दूरदर्शिता के साथ परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने की कला है। परिवार के लिये जो महत्व अर्थशास्त्र का है, वही महत्व राज्य के लिये राजनीतिक अर्थशास्त्र का है।" बाद में प्रकृतिवादियों (Physiocrats) का अभ्युदय हुआ जिनमें क्वे (Quesnay) को प्रकृतिवाद का संस्थापक माना जाता है। इन लोगों के अनुसार अर्थशास्त्र केवल धन की प्राप्ति का ही नहीं वरन उसके वितरण का भी विज्ञान है।

बाद में परम्परावादी अर्थशास्त्री Adam Smith, Recardo, J.S. Mill ने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान (Science of Wealth) कहकर पुकारा और धन के उत्पादन, विनिमय, वितरण एवं उपभोग की विस्तृत व्याख्या की। अतः Classical

Scanned with CamScanner

आलोचनाएँ :- यद्यपि मार्शल की परिभाषा ने Adam Smith की परिभाषा की त्रुटियों को दूर कर अर्थशास्त्र में मानव-कल्याण पर बल दिया और लंबे अरसे तक मार्शल की परिभाषा सर्वमान्य रही फिर भी कुछ अर्थशास्त्रियों ने उनकी परिभाषा की कटु आलोचना की जिनमें प्रो० रॉबिन्स का नाम सबसे प्रमुख है।

(i) मार्शल की परिभाषा ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को संकुचित कर दिया है- मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र भौतिक-कल्याण का विज्ञान है और इसमें अभौतिक-साधनों का अध्ययन नहीं किया जाता है। प्रो० रॉबिंस के अनुसार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध केवल भौतिक-साधनों से जोड़ना इसके क्षेत्र को सीमित करना है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सभी आर्थिक-क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है चाहे वे भौतिक हों या अभौतिक।

(ii) क्रियाओं को आर्थिक और गैर-आर्थिक क्रियाओं में विभक्त करना गलत :- मार्शल ने अपनी व्याख्या में आर्थिक-क्रियाओं को भागों में विभक्त किया और उनका मानना था कि अर्थशास्त्र में केवल आर्थिक-क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाना चाहिये। गैर-आर्थिक-क्रियाओं का अध्ययन इसके क्षेत्र से बाहर है। प्रो० रॉबिंस के अनुसार आर्थिक-क्रियाओं का यह विभाजन सही नहीं है। उनके अनुसार प्रत्येक कार्य का एक आर्थिक महत्व होता है। एक ही क्रिया एक जगह आर्थिक तो दूसरी जगह गैर-आर्थिक हो जाती है। जैसे किसी - दूध पिलाने की क्रिया। यदि कोई औरत मां के रूप में दूध पिलाती है तो वह गैर-आर्थिक लेकिन जब नौकरानी के रूप में दूध पिलाती है तो वह आर्थिक हो जाती है।

(iii) अर्थशास्त्र को सामाजिक-मनुष्यों तक सीमित रखना गलत है:- मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र में केवल सामाजिक एवं सामान्य मनुष्यों का अध्ययन किया जाता है, जंगलों में रहने वाले एकांतवासी साधु-संन्यासियों का नहीं लेकिन प्रो० रॉबिंस के अनुसार यह विचारधारा गलत है। उनके अनुसार मनुष्य समाज में

Scanned with CamScanner

अमूर्त सेवाओं का भी आर्थिक महत्व है और उसका अध्ययन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

मार्शल की कल्याण सम्बन्धी परिभाषा :- प्राचीन अर्थशास्त्रियों Adam Smith, Ricardo, J.B. Say, J.S. Mill आदि ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में केवल धन पर जोर दिया और मानव-कल्याण की अवहेलना की जिसके कारण इस की काफी आलोचनायें हुयी। इन लोगों ने धन को साध्य मान लिया था। विरोध की अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल ने प्राचीन अर्थशास्त्रियों की इस समय से चली आ रही धारणाओं को बदल डाला और धन की अपेक्षा मानव-कल्याण पर विशेष बल दिया। मार्शल ने सन 1890 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Principle of Political Economy में अर्थशास्त्र के अध्ययन में मनुष्य के भौतिक कल्याण पर बल देते हुये अर्थशास्त्र की एक नवीन परिभाषा दी जो निम्न है :- 'अर्थशास्त्र में मानव जीवन साधारण व्यापार सम्बन्धी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्रियाओं के उस भाग का अध्ययन करता है जिसका निकट सम्बन्ध भौतिक साधनों की प्राप्ति तथा उसके उपयोग से है।'' (Economics is a study of mankind in the ordinary business of life, it examines that part of individual & social action which is most closely connected with the attainment and with the use of the material requisites of well being." इस प्रकार मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र में धन की प्राप्ति के लिये आर्थिक-क्रियाओं का अध्ययन तो किया जाता है किन्तु उसका अंतिम उद्देश्य मानव-कल्याण की प्राप्ति करना है।

अन्य कल्याणकारी अर्थशास्त्री पिगु (Pigou), कैनन (Canan), बेवरीज J.M. Keynes आदि ने भी मार्शल की विचारधारा का समर्थन किया और अपने-अपने ढंग से अर्थशास्त्र को परिभाषित किया जो निम्न है :-

रहे या समाज से बाहर, सभी को आर्थिक-समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अत: अर्थशास्त्र में सभी मनुष्यों का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र केवल सामाजिक-विज्ञान न होकर मानव-विज्ञान भी है।

(iv) अर्थशास्त्र का कल्याण से कोई सम्बन्ध नहीं है:- प्रो० रॉबिंस के अनुसार अर्थशास्त्र का कल्याण से कोई सम्बन्ध नहीं है। कुछ ऐसी भी वस्तुएँ हैं जिनसे मनुष्य को कल्याण के बदले अहित होता है फिर भी अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उनका अध्ययन किया जाता है। जैसे- शराब एवं अफीम का उत्पादन। इन वस्तुओं के उपभोग से भी उपयोगिता मिलती है तथा आवश्यकता की पूर्ति होती है। अत: अर्थशास्त्र को केवल कल्याण तक सीमित रखना गलत है।

Robbins की दुर्लभता-सम्बन्धी परिभाषा:- प्रो० Robbins ने 1932 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "An Essay on the Nature & Significance of Economic Science" में अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुये लिखा है कि:- "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो साध्य एवं सीमित साधनों, जिनका वैकल्पिक प्रयोग होता है, के सम्बन्ध के रूप में मानव आचरण का अध्ययन करता है।" प्रो० Robbins ने अर्थशास्त्र को सीमित साधनों का विज्ञान माना है और उनके अनुसार अभाव (Scarcity) ही आर्थिक-जीवन का मूल आधार है तथा चयन की समस्या ही इसकी मुख्य समस्या है। इस प्रकार Robbins के अर्थशास्त्र की परिभाषा मानव-व्यवहार के उस पहलू पर आधारित है जिसके चलते वह अपनी अनन्त आवश्यकताओं के पूर्ति के लिये सीमित साधनों का प्रयोग चयन के आधार पर करता है।

प्रो० Robbins की परिभाषा निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है:-

(i) मनुष्य की आवश्यकतायें अनंत हैं (ii) उन आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन सीमित हैं (iii) परंतु सभी आवश्यकतायें एक समान प्रबल या महत्वपूर्ण नहीं होती।

Scanned with CamScanner

है (iv) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग हो सकता है।

प्रो० Robbins के अनुसार अर्थशास्त्र मानव-आचरण के उस पहलू का अध्ययन करता है जिसका सम्बन्ध उपर्युक्त चार बातों से है। इसका कारण यह है कि जहाँ ये चार बातें होंगी, वहीं आर्थिक प्रश्न की उत्पत्ति होगी। हमारी आवश्यकतायें अनन्त हैं और उसकी पूर्ति के साधन सीमित हैं तथा उन साधनों का वैकल्पिक प्रयोग हो सकता है। अत: ऐसी अवस्था में व्यक्ति को चयन करना पड़ता है कि वह अपने सीमित साधनों को सर्वप्रथम किस आवश्यकता की पूर्ति पर खर्च करे। उदा- के लिये किसी विद्यार्थी के पास 50 रुपये हैं और उसको पुस्तक खरीदने की, सिनेमा देखने की, कमीज खरीदने की आवश्यकता है। अब उसके समक्ष यह समस्या उत्पन्न होती है कि वह उपलब्ध रुपये से सर्वप्रथम किस आवश्यकता की पूर्ति करे। यही चयन की समस्या है और इसे सुलझाने के लिये आवश्यकताओं की तीव्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना पड़ता है। जो आवश्यकता अधिक तीव्र होगी, विद्यार्थी सर्वप्रथम अपने रुपये को उसी पर खर्च करेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि अर्थशास्त्र में इसी चुनाव का अध्ययन किया जाता है। इसमें कौन-सा चुनाव अच्छा है या बुरा, इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है। अच्छे-बुरे का निर्णय नीतिशास्त्र का विषय है, अर्थशास्त्र का नहीं। अत: कहा जाता है कि अर्थशास्त्र चयन का तर्कशास्त्र है। Economics is the logic of choice. चयन की समस्या इसलिये उत्पन्न होती है कि हमारी आवश्यकतायें अनंत हैं और पूर्ति के साधन सीमित हैं;

यह चयन की समस्या केवल सामाजिक मनुष्यों के लिये ही नहीं वरन् एकांतवासी मनुष्यों पर भी सामान्य रूप से लागू होती है। शर्त केवल यह है कि साधन सीमित होने चाहिये। उदा० के लिये किसी संन्यासी के पास एक घंटे का समय है और उसमें वह भिक्षा, विष्णु की पूजा कर सकता है, अपने शिष्यों को उपदेश दे सकता है। ऐसी स्थिति में संन्यासी को भी चुनाव करना होगा क्योंकि उसके पास उपलब्ध समय सीमित है।

Scanned with CamScanner

क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य धन की प्राप्ति है। Adam Smith के अनुसार धनोपार्जन सम्बन्धी क्रियाओं का अर्थ धन के उत्पादन, विनिमय, वितरण एवं उपभोग सम्बन्धी क्रियाओं से है। उन्होंने समाज में रहने वाले व्यक्तियों को दो भागों में बाँटा — आर्थिक मानव एवं गैर आर्थिक मानव। Adam Smith के अनुसार अर्थशास्त्र में केवल आर्थिक-मानव की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। Adam Smith की इस विचारधारा का समर्थन अन्य प्रसिद्ध अर्थशास्त्री Ricardo, J.S. Mill, J.B. Say, Walker ने भी किया।

Adam Smith की परिभाषा की आलोचना :- Adam Smith की परिभाषा में धन पर विशेष बल देने के कारण इसकी Ruskin, कार्लाइल (Carlyle) एवं विलियम मॉरिस (William Morriss) के द्वारा कटु आलोचना की गयी और इसे "धन का धर्मशास्त्र", निकृष्ट-विज्ञान, कुबेर की पूजा, रोटी-मक्खन का विज्ञान की संज्ञा दी। वास्तव में Adam Smith की परिभाषा की निम्नलिखित आलोचनायें की जाती हैं :-

(i) सम्पत्ति पर अत्यधिक जोर :- Adam Smith ने अपनी परिभाषा में केवल धन पर जोर दिया है और मानव-कल्याण को नजरअंदाज किया है। वास्तव में धन केवल साधन है, साध्य नहीं।

(ii) आर्थिक-मानव की कल्पना भ्रामक :- Adam Smith ने अपनी परिभाषा में जिस आर्थिक मानव की कल्पना की है वह गलत एवं भ्रामक है। वास्तव में समाज में ऐसे व्यक्ति का मिलना मुश्किल है जो केवल धन के पीछे भागता हो और अपने दूसरे हितों की उपेक्षा करता हो।

(iii) 'सम्पत्ति' शब्द का संकुचित अर्थ :- Adam Smith ने 'सम्पत्ति' शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में किया है। उनके अनुसार भौतिक, मूर्त, स्पर्शनीय वस्तुएँ ही संपत्ति की श्रेणी में आता है, जैसे- कपड़ा, चावल, मकान इत्यादि। अमूर्त वस्तुओं को उन्होंने संपत्ति की श्रेणी में नहीं रखा, जो गलत है। आज शिक्षक, डाक्टर आदि की

Scanned with CamScanner

Economist Adam Smith को ही आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है जिन्होंने 1776 ई० में प्रकाशित अपनी पुस्तक "An Enquiry into the Nature & causes of the Wealth of Nations" में अर्थशास्त्र के अध्ययन को एक क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अवधारणा प्रस्तुत की।

परिभाषा :- अर्थशास्त्र की परिभाषा को लेकर अर्थशास्त्रियों में मतैक्य नहीं है और भिन्न-2 अर्थशास्त्रियों ने अलग-2 तरीके से अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है। अर्थशास्त्रियों की इसी विचारभिन्नता को देखकर बारबरा वूटन ने कहा है कि :- "जहाँ भी छः अर्थशास्त्री इकट्ठे होते हैं, वहाँ सात मत हो जाते हैं।" फिर भी अर्थशास्त्र की जितनी भी परिभाषायें दी गयी हैं उनके आधार पर उसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है :-

(i) प्राचीन अर्थशास्त्रियों (Classical Economists) की परिभाषा जिनमें Adam Smith की परिभाषा सबसे प्रमुख है।

(ii) मार्शल की परिभाषा (iii) रॉबिन्स की परिभाषा

प्राचीन अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को मुख्यतः धन का विज्ञान मानते जबकि मार्शल ने मानव-कल्याण पर विशेष जोर दिया और अर्थशास्त्र को "भौतिक कल्याण का विज्ञान कहा। आगे चलकर प्रो० रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को सीमित साधनों के विज्ञान की संज्ञा दी।

Adam Smith की परिभाषा :- Adam Smith को अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। Adam Smith ने 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "An Enquiry into the Nature & causes of Wealth of Nations" में अर्थशास्त्र को "धन का विज्ञान" माना है (Economics is a Science of Wealth)। उनके अनुसार अर्थशास्त्र में केवल धनोपार्जन सम्बन्धी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है और आर्थिक-